भारत सरकार
पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय
राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 631 जिसका उत्तर
मंगलवार, 7 फरवरी, 2023 (18 माघ, 1944 (शक)) को दिया जाना है

देश में पत्तन और टर्मिनल संबंधित अवसंरचना

631 **श्री एस. कल्याणसुन्दरम :**
श्री एम. मोहम्मद अब्दुल्ला :
श्री आर. गिरिराजन :

क्या **पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि जनगणना और आर्थिक सूचना केन्द्र (सीईआईसी) के आंकड़ों के अनुसार कंटेनर थ्रूपुट के मामले में भारत 16 मिलियन टीईयू को देखते हुए कई विकसित और विकासशील देशों से काफी पीछे है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या यह सच है कि भारत को विश्व का कारखाना बनाने का केन्द्र सरकार का लक्ष्य प्राप्त करना अपर्याप्त पत्तन अवसंरचना की वजह से बड़े कंटेनर जहाजों को आकर्षित करने में देश की असमर्थता के कारण कठिन है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) केन्द्र सरकार द्वारा मौजूदा पत्तनों और टर्मिनल अवसंरचनाओं को अति विशाल जलयानों की सहज आवाजाही के लिए सुदृढ़ करने के लिए उठाए गए और उठाए जा रहे कदमों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री
(श्री सर्बानंद सोणोवाल)

(क) : जी, हां। वर्ष 2020 की अवधि के लिए भारतीय पत्तनों का कंटेनर थ्रू-पुट 17 मिलियन टीईयू रहा, जबकि इसी अवधि के लिए चीन का कंटेनर थ्रू-पुट 245 मिलियन टीईयू था। वर्ष 2020 की अवधि के दौरान 20 बड़े वैश्विक पत्तनों का संयुक्त कंटेनर थ्रू-पुट 357 मिलियन टीईयू था।

(ख) और (ग) : इस समय, भारत में अत्यधिक (अल्ट्रा) बड़े आकार के कंटेनर पोतों के लिए कोई लैंडसाइड मेगा-पत्तन और टर्मिनल अवसंरचना नहीं है। पत्तनों को ज्यादा गहरे डुबाव, बड़े आकार की कई क्रेनों, बेहतर यार्ड प्रबंधन क्षमता, विस्तारित स्वचालन, बड़े आकार की भंडारण सुविधाओं, ज्यादा जमीनी संपर्कता और बढ़ी हुई श्रम उत्पादकता की आवश्यकता होती है। अत्यधिक बड़े आकार के कंटेनर पोतों में वहन जा रही बड़ी मात्रा को तीव्रगति से उतारने की आवश्यकता होती है। भारत में, वैश्विक मानक के पत्तनों को

विकसित करने के लिए, मैरीटाइम इंडिया विजन (एमआईवी) 2030 में वैश्विक-श्रेणी के मेगा पत्तनों, ट्रांशिपमेंट केन्द्रों और पत्तनों की अवसंरचना के आधुनिकीकरण जैसी पहलें चिन्हित की गई हैं। भारतीय पत्तनों में वैश्विक-श्रेणी के अवसंरचना के क्षमता संवर्धन और विकास के लिए 1,00,000-1,25,000 करोड़ रु. तक के निवेश का अनुमान लगाया गया है। विझिंझम (केरल) और वधावन (महाराष्ट्र) में तैयार होने वाले पत्तनों में 18 मीटर से अधिक का प्राकृतिक डुबाव है, जोकि इन पत्तनों में अत्यधिक बड़े आकार के कंटेनर और कार्गो जलयानों का प्रवेश सुगम करेंगे जिससे कंटेनर और कार्गो थ्रू-पुट में सुधार लाकर भारत को विश्व का कारखाना बनाने के प्रयासों को गति मिलेगी।

*****